ग्रहों और चांदों का नाम का झगड़ा

1930 में एक ग्रह खोजा गया था। इसका नाम क्या रखा जाए, इसे लेकर चर्चाएं चल रही थीं, काफी झगड़े भी थे। तमाम नाम आए थे मगर अंततः जो नाम चुना गया वह एक 11-वर्षीय बच्ची वेनेशिया बर्नी ने सुझाया था - प्लूटो। हालांकि 2-3 साल पहले प्लूटो की ग्रह की हैसियत जाती रही मगर नामों को लेकर झगड़े आज भी होते हैं।

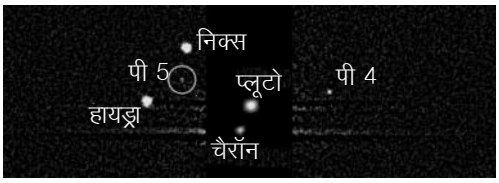

हाल ही में प्लूटो के दो और चांद खोजे गए हैं। पहले इसके तीन चांद ज्ञात थेः चैरॉन, निक्स और हायड्रा। 2011 और 2012 में हबल अंतरिक्ष दूरबीन की मदद से दो और चांद खोजे गए। इन्हें फिलहाल पी-4 और पी-5 नाम दिए गए हैं। अब अंतर्राष्ट्रीय खगोल संघ को इनके स्थायी नाम तय करना है और यह काम आसान नहीं होने वाला।

एक परिपाटी यह रही है कि किसी आकाशीय पिंड का नाम रखने का प्रथम अधिकार उसके खोजकर्ता को दिया जाता है। खोज दल ने प्लूटो के इन दो चांदों के लिए वल्कन और सर्बेरस नामों के प्रस्ताव रखे हैं। अलबत्ता, ये दो नाम शायद स्वीकार न हों क्योंकि वल्कन नाम पहले से ही एक अनुमानित ग्रह को दिया जा चुका है जिसके सूर्य और बुध के बीच होने की संभावना व्यक्त की गई है जबकि सर्बेरस नाम एक क्षुद्र ग्रह को मिल चुका है और खगोल संघ नामों के दोहराव से बचता है।

प्लूटो के चांद पर तो शायद वोट डालकर फैसला हो जाएगा मगर इसी बीच एक नया विवाद खड़ा हो गया है। पिछले कुछ वर्षों में सौर मंडल से बाहर कई सारे ग्रह खोजे गए हैं। ऐसे लगभग 1000 सौरेतर ग्रह खोजे जा चुके हैं और जिस गति से सौर मंडल से बाहर खोजें हो रही हैं, उसे देखकर लगता है कि सूची बढ़ती ही जाएगी।

अभी तक इन ग्रहों को तकनीकी नाम दिए जाते रहे हैं। जैसे 1999 में खोजे गए एक ऐसे ग्रह का नाम है एचडी 209458 बी। यह बृहस्पति के बराबर साइज़ का एक गैसीय ग्रह है। मगर वैज्ञानिकों को लगता है कि इन सारे सौरेतर ग्रहों को लोकप्रिय नाम भी ज़रूर मिलना चाहिए।

इस वर्ष फरवरी में यूएसए के कोलेरैडो प्रांत की एक अंतरिक्ष-शिक्षा कंपनी उविंगु ने इस काम को आसान बनाने के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित कर डाली। कंपनी का इरादा यह था कि प्रतियोगिता में भाग लेने वाले लोग ग्रहों के लिए जो नाम सुझाएंगे उनको मिलाकर एक पुस्तिका तैयार की जाएगी और खगोल शास्त्री इसमें से नाम चुन सकेंगे। कंपनी का यह भी विचार है कि इस प्रतियोगिता में जिन नामों को खूब वोट मिलेंगे वे लोकप्रिय हो जाएंगे, फिर खगोल संघ चाहे जो नाम चुने। प्रतियोगिता में नाम सुझाने की फीस करीब 5 डॉलर और वोट डालने की फीस 1 डॉलर है। 22 अप्रैल तक इस प्रतियोगिता में 1242 नाम आ चुके थे और 6178 वोट पड़ चुके थे।

दूसरी ओर, अंतर्राष्ट्रीय खगोल संघ ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करके कहा है कि संघ ही खगोलीय पिंडों को नाम देने का एकमात्र अधिकारी है। संघ के अध्यक्ष एलैन लेकावेलिए डेस एटांग्स का कहना है कि वे 6 माह के अंदर यह तय कर लेंगे कि इन सारे खगोलीय पिंडों को लोकप्रिय नाम दें या न दें। तब तक के लिए विवाद जारी है। ***(स्रोत फीचर्स)***